

ग्रामोदयोग विकास योजना तथा ग्रामोदयोग

प्रलिस के लयल:

[ग्रामोदयोग वकलस योजनल \(GYV\)](#), [खलदी और ग्रामोदयोग आयोग \(KVIC\)](#), [खलदी वकलस योजनल \(KVY\)](#)

मेन्स के लयल:

ग्रलमीण वकलस को बढलवल, ग्रलमीण उदयोगों के वकलस के लयल पहल, ढरततीय अरथवयवसुथल में ग्रलमोदयोग कल महतुतुव

चरुल में कुयों?

दललली के उपरलकुयुपल ने '[ग्रलमोदयोग वकलस योजनल](#)' के तहत 130 ललढरथुयों को मधुमकुखी बकुसे और दूलकटल वतलरतल कुयल ।

- इस कलरुयकुरम कल आयोगन [खलदी और ग्रलमोदयोग आयोग](#) दवलरल गयल थल ।

ग्रलमोदयोग वकलस योजनल (GVY):

परकुयल:

- इसे मलरुच 2020 में लॉनुच कुयल गयल थल ।
- यह [खलदी ग्रलमोदयोग वकलस योजनल](#) के दो घटकों में से एक है जो एक [केंदुरीय कुषेतर योजनल \(Central Sector Scheme- CSS\)](#) है ।
 - खलदी ग्रलमोदयोग वकलस योजनल कल दूसरल घटक खलदी वकलस योजनल (KVY) है कुसलमें रोजगलर युक्त गलँव, डकुललइन हलउस (DH) जैसे दो नए घटक शलमलल है ।

उददेशुय:

- GVY कल लकुषुय सलमलनुय सुवधलओ, प्रुदयोगकुल आधुनकुलकरण, प्रशकुषण आदल के मलधुयम से ग्रलमीण उदयोगों को बढलवल देनल और वकुसतल करनल है ।

शलमलल गतवधलधुयलँ:

- कुषल आधलरतल एवं खलदुय प्रसंसुकरण उदयोग (ABFPI)
- खनकुल आधलरतल उदयोग (MBI)
- कललुयण एवं सौंदरुय प्रसलधन उदयोग (WCI)
- हसुतनरलमतल कलगकु, कुमडल और प्ललसुटकल उदयोग (HPLPI)
- ग्रलमीण इंकुनलरलरगल और नई प्रुदयोगकुल उदयोग (RENTI)
- सेवल उदयोग

घटक:

- अनुसंधलन एवं वकलस और उतुपलद नवलचलर:** अनुसंधलन एवं वकलस सलहलतल उन संसुथलनलँ को दल कुलतल है जो उतुपलद वकलस, नए नवलचलर, डकुललइन वकलस, उतुपलद ववधुीकरण प्रकुरुयलओ आदल को प्रुतुसलहतल करेगल ।
- कुषमतल नरलमलण:** मलकुडल मलसुटर डेवलपमेंट दुरेनगल सेंटर (MDTC) और उतुकृषुट संसुथलन मलनुव संसलधन वकलस एवं कुशल प्रशकुषण घटकलँ के हसुसे के रूड में कुरुमचलरुयलँ तथल कलरुीगरुलँ कुल कुषमतल नरलमलण को उकुलगर करते है ।
- वडुणन और प्रुचलर:** ग्रलम संसुथलन उतुपलद सूकुी, उदुयोग नरलदेशकुल, डलकुलर अनुसंधलन, नई वडुणन तकनलक, खरुीदलर-वकुलरुेतल डैठकलँ, प्रुदरुशनलरुलँ कुल वुयवसुथल आदल कुल तैयलरुी के मलधुयम से डलकुलर सडरुथन प्रुदलन करते है ।

खलदी और ग्रलमोदयोग आयोग (KVIC):

- KVIC खलदी और ग्रलमोदयोग आयोग अधनलनुयलड, 1956 के तहत सुथलडतल एक वैधलनकुल नकुलड है ।
- KVIC पर कुलहुँ डल आवशुयक हो, ग्रलमीण वकलस में लगल अनुय एकुसेसुयलँ के सलथसडनुवड में ग्रलमीण कुषेतरुलँ में खलदी और अनुय ग्रलम उदुयलँ के

- विकास हेतु कार्यक्रमों की योजना, प्रचार, संगठन तथा कार्यान्वयन की ज़िम्मेदारी है।
- यह [MSME मंत्रालय](#) के तहत कार्य करता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में ग्रामोद्योग का महत्त्व

- **रोज़गार सृजन:** ग्रामोद्योग श्रम प्रधान होते हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार के पर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं। वे विशेषकर ग्रामीण आबादी के बीच बेरोज़गारी और अल्परोज़गार को कम करने में योगदान देते हैं।
 - ये उद्योग कुशल, अर्द्ध-कुशल और अकुशल श्रमिकों सहित पर्याप्त कार्यबल को अवशोषित करते हैं।
- **ग्रामीण विकास:** ग्रामोद्योग, ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास में योगदान देते हैं। गाँवों में छोटे पैमाने के उद्यम स्थापित करके, वे स्थानीय आर्थिक गतिविधियों को बनाने, शहरी क्षेत्रों में प्रवासन को कम करने और शहरों में आबादी की सघनता को रोकने में मदद करते हैं।
- **गरीबी नरिमूलन:** ग्रामोद्योग, ग्रामीण समुदायों के लिये आय उत्पन्न करके गरीबी उन्मूलन में योगदान करते हैं। वे उन लोगों के लिये आजीविका के विकल्प प्रदान करते हैं जिनकी औपचारिक रोज़गार के अवसरों तक सीमिति पहुँच है, विशेष रूप से कृषिक्षेत्र में।
 - उद्यमिता और स्व-रोज़गार को बढ़ावा देकर, ये उद्योग व्यक्तियों को उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में सुधार करने के लिये सशक्त बनाते हैं।
- **स्थानीय संसाधनों का उपयोग:** ग्रामोद्योग आमतौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध स्थानीय संसाधनों और कच्चे माल का उपयोग करते हैं। इससे सतत विकास को बढ़ावा देने और बाह्य संसाधनों पर निर्भरता कम करने में मदद मिलती है।
 - यह स्थानीय रूप से उपलब्ध कौशल, पारंपरिक ज्ञान और प्राकृतिक सामग्रियों के उपयोग को प्रोत्साहित करता है, इस प्रकार स्थानीय वरिसत्त तथा संस्कृतिको संरक्षित करता है।
- **नरियात क्षमता:** कई ग्रामीण उद्योग पारंपरिक शिल्प, हथकरघा, हस्तशिल्प और अन्य अद्वितीय उत्पादों का उत्पादन करते हैं जिनकी घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय बाजारों में उच्च मांग है।
 - इन उत्पादों के नरियात से वदेशी मुद्रा प्राप्त होती है और देश की वैश्विक व्यापार प्रतिस्पर्द्धात्मकता बढ़ती है।

ग्रामोद्योग के विकास हेतु अन्य पहल

- [दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना](#)
- [प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना](#)
- [राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मशिन](#)

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. भारत में स्मार्ट नगर स्मार्ट गाँवों के बना नहीं रह सकते हैं। ग्रामीण-नगरी एकीकरण की पृष्ठभूमि में इस कथन पर चर्चा कीजिये। (2015)

[स्रोत: पी.आई.बी.](#)